CSIR in Media

Platinum Jubilee 1942-2016

75 Years of

CSIR Touching Lives

A Daily News Bulletin
22nd May 2017

Amol Chaudhari (left) and Nilay Lakhkar with their product.

Produced by Unit for Science Dissemination, CSIR, Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi

Pune scientists develop new bone graft substitutes

CSIR-NCL

19th May 2017

Two scientist-entrepreneurs working out of their lab at the Venture Centre of the National Chemical Laboratory (NCL), Pune, have developed two new bone graft substitutes, which will better augment and regenerate bones lost due to any disease or injury. These will also come handy in the case of those with congenital defects.

Amol Chaudhari (left) and Nilay Lakhkar with their product.

Doctors that TOI contacted said they were already looking forward to the commercial availability of the products, especially for their near-to-natural composition, porous structure and resorbable feature. And what more! They will be available at a cost lesser than those of the currently-available imported varieties, they said.

It took scientists Nilay Lakhkar and Amol Chaudhari nearly a year to develop the products - PoroSyn and SynOst (bioactive synthetic bone graft granules and putty).

Backed by a financial grant from Biotechnology Industrial Research Assistance Council (BIRAC) for their innovative work in bio-tech products, the scientist-duo have already submitted a provisional patent application for PoroSyn. It has been developed with proprietary technology and is composed of calcium, sodium and phosphorous - three elements naturally found in bones.

They will ensure better uptake of the treatment by the body as well as heal faster.

While the concept has already got the thumbs up at the recent Pitch Fest in the Start Up Bio 2017 event at Bangalore, the process for conducting clinical trials of the products has also already been initiated.

The duo is excited about the initial response to the products.

Published in:

TOI

टी वाइन के लिए भारतीय वैज्ञानिको की माँगी मदद

CSIR-IHBT

22nd May 2017

नई दिल्ली | विशेष संवाददाता

अफ्रीकी देश मोजाम्बिक ने चाय के जायके में बदलाव के लिए भारतीय वैज्ञानिकों की मदद मांगी है। सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित टी वाइन में मोजाम्बिक दिलचस्पी ले रहा है।

मोजाम्बिक के वैज्ञानिक चाहते हैं कि वे अपनी चाय को टी वाइन में बदलाव चाय उत्पादकों की आय में इजाफा करें। सीएसआईआर के पालमपुर स्थित संस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायोसोर्स टेक्नोलॉजी (आईएचबीटी) ने टी वाइन तैयार की है। इस संस्थान के पास चाय के बागान भी हैं। संस्थान ने टी वाइन को भारतीय कंपनी को भी हस्तांतरित किया है। साथ ही विदेशी कंपनियों ने भी टी वाइन में दिचलस्पी दिखाई है। मोजाम्बिक की सरकार ने इस तकनीक को लेने की इच्छा जताई है।

आईएचबीटी के निदेशक संजय कुमार ने हिन्दुस्तान को बताया कि मोजाम्बिक से बातचीत चल रही है।

Published in:

Hindustan, Page 18

राख के कंक्रीट से सड़क बनी

CSIR-CBRI

22nd May 2017

नई दिल्ली (ब्यूरो)। एनटीपीसी-नेट्रा व सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रूड़की ने मिलकर फ्लाई एश (बिजली उत्पादन के दौरान निकलने वाली राख) जियोपॉलीमर विकसित किया है, जिसकी मदद से आईआरसी नमूने के मुताबिक सड़क बनाने का कार्य किया जा रहा है। कंक्रीट बनाने में एनटीपीसी के दादरी प्लांट के फ्लाई एश का इस्तेमाल किया जा रहा है।

Published in:

Amar Ujala, Page 5

वैज्ञानिक समाजोपयोगी शोध को दे तरजीह : प्रो आलोक धवन

CSIR-IITR

19th May 2017

कार्यशाला

आइआइटीआर में बी ए सांइटिस्ट विषय पर कार्यशाला आयोजित

लखनऊ। भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान(आइआइटीआर) में गुरुवार को 8 वीं कक्षा से 12 वीं कक्षा तक के स्कूल के छात्रों के लिए 'बी ए साइंटिस्ट' पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में लखनऊ पब्लिक कॉलेज, ला मार्टिनियर गर्ल्स कॉलेज, ला मार्टिनियर कॉलेज बोए.ज, लॉरेटो कॉलेज, विज्डम एज्युकेशनल एकेडमी, लखनऊ सिटी कॉलेज, यूनिटी कॉलेज, स्टडी हॉल, विद्या ट्री मॉडर्न वर्ल्ड कॉलेज, केन्द्रीय विद्यालय अलीगंज, एआर जयपुरिया स्कूल, सेंट डॉमिनिक सेवियो कॉलेज, एमआर जयपुरिया स्कूल बंसल कैम्पस, सिटी मोंटेसरी स्कूल, सेक्टर-ओ, दिल्ली पब्लिक स्कूल, केवीआईआईटी कानपुर, एसटी क्लेर्स कॉन्वेंट स्कूल, क्राइस्ट चर्च कॉलेज लखनऊ के छात्रों ने भाग लिया। डॉ. देवेन्द्र परमार, प्रमुख वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत किया और सीआईएसआईआर जिज्ञासा स्कूल के बच्चों के लिए पहल कार्यक्रम के बारे में बताया।

इस मौके पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आलोक धवन ने इस दिन के छात्र वैज्ञानिकों को विज्ञान के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने के लिए प्रेरणात्मक विचारों और प्रेरणा के साथ संबोधित किया और कहा कि वह ऐसा शोध करें जो समाज के लिए उपयोगी हो। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आर. पार्थसारथी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और इस कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज और यूपीएएए का आभार प्रकट किया। इस दौरान शहर भर से आये स्कूलों के छात्रों और शिक्षकों ने उन्नत इमेजिंग सुविधा, कम्प्यूटेशनल टॉक्सीकोलॉजी सुविधा, ट्रांसलेशन सुविधा, खाद्य विषाक्तता और मिलावट और आणविक जीव विज्ञान की सुविधा को देखा और सीएसआईआर-आईआईटीआर के वैज्ञानिकों और अनुसंधान विद्वानों से बातचीत की। छात्रों को डीएनए आइसोलेशन, अणुओं और रसायनों का निर्माण और देखने, तेल में मिलावट ,प्रदूषण का पता लगाने और और इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी सुविधाओं को देखने और समझने का मौका मिला। *वसं.*

Published in:

Jansandesh Times, Page 3

पारंपरिक चिकित्सा मे बड़ी उपलब्धि

CSIR-NBRI

21st May 2017

■ एजेंसियां, नई दिल्ली

13

सरकारी संस्था सीएसआईआर-एनबीआरआई द्वारा विकसित डायबीटीज की आयुर्वेदिक दवा बीजीआर-34 दुनिया के टॉप दवा ब्रांड में शामिल हो गई है। पिछले दो सालों के दौरान बाजार में आई टॉप-20 दवाओं में यह दवा 14वें पायदान पर रही। इस टॉप-20 में सिर्फ बीजीआर ही आयुर्वेदिक दवा है, बाकी सभी दवाएं एलोपैथिक हैं। इस बीच साइंस एंड टेक्नोलॉजी मिनिस्टर हर्षवर्धन ने ट्वीट कर कहा है कि डायबीटीज के 67 फीसदी मामलों में यह दवा कारगर साबित हुई है।

ऑल इंडियन ओरिजन केमिस्ट्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमिटेड (एआईओसीडी) द्वारा पिछले दो सालों के दौरान बाजार में आईं 6367 दवाओं पर अध्ययन किया गया। इनमें भारतीय और अन्य प्रमुख देशों के बाजार में उतारी जाने वाली दवा को भी शामिल किया गया है। एआईओसीडी के अनुसार, दवाओं की बिक्री, मरीजों पर प्रभाव आदि पैरामीटरों पर रैंकिंग कर मैट वेल्यू निकाली जाती है जिसके बाद टॉप 20 दवाओं का चयन किया गया।

दवा को बाजार में लाने वाली कंपनी एमिल फार्मास्युटिकल के चैयरमैन के. के. शर्मा ने कहा कि आधुनिक मानकों के अनुरूप आयुर्वेद की दवा तैयार करने का श्रेय सीएसआईआर के वैज्ञानिकों को जाता है।

इस दवा को तैयार करने वाली टीम के प्रमुख एनबीआरआई लखनऊ के वैज्ञानिक ए. के. एस. रावत ने कहा कि यह भारतीय चिकित्सा पद्धतियों और आयुर्वेद के लिए बड़ी उपलब्धि है। यह दवा बाजार में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की डायबीटीज दवाओं की बराबरी कर रही है।

Published in:

Navbharat Times, Page 13